ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

औपनिवेशिक वाराणसी में काशिराज का ऐतिहासिक महत्व

पल्लवी उपाध्याय
शोधार्थी इतिहास
महाराज बलवन्त सिंह पी0जी0 कालेज,
गंगापुर (राजातालाब) वाराणसी

काशी शब्द का अर्थ है प्रकाश देने वाली नगरी जिस स्थान से ज्ञान का प्रकाश चारो ओर फैलता है, उसे काशी कहते है। ऐसी मान्यता है कि काशी–क्षेत्र में देहान्त होने पर जीव को मोक्ष की प्राप्ति होती है, काश्यांमरणान्मुक्तिः जैसे कि, काशी नाम का मतलब भक्ति जगह, तीर्थयात्रा स्थान वाराणसी पवित्र शहर होता है और इस अर्थ का प्रभाव काशी नाम के व्यक्ति के स्वभाव में भी दिखने लगता है। पौराणिक कथा के अनुसार बनारस का नाम काशी प्राचीनकाल के एक राजा काशी के नाम पर पड़ा, करीब 3000 बरसों से बनारस को काशी बोला जा रहा है काशी शब्द का अर्थ उज्वल है. भगवान शिव की नगरी हमेशा चमकती रहती है जिसे कशाते यानि रौशनी का शहर (सिटी ऑफ लाइट) भी कहा जाता था. जिससे इसका नाम भी काशी हो गया।

दिवोदास एक पौराणिक पात्र हैं, जो काशी के राजा के रूप में प्रख्यात हैं। उनका पहले का नाम रिपुज्जय था। उनके तपोबल से सन्तुष्ट ब्रह्मा जी के द्वारा उन्हें दिवोंदास नाम प्रदान किया गया। प्राचीन समय में काशी पर शासन करने वाले शासक को 'काशिराज' कहा जाता था। काशिराज के बाद उसका पुत्र काशिराज बना और श्रीकृष्ण से बदला लेने का निश्चय किया। वह श्रीकृष्ण की शक्ति जानता था इसलिए उसने कठिन तपस्या कर भगवान शिव को प्रसन्न किया और उन्हें समाप्त करने का वर माँगा। वाराणसी नदी में गंगा नदी तक भीमचंडी से पवंतेश्वर तक काशी का विस्तार है उक्त की वाराणसी आधुनिक बसा हूँ। शुक्ल नदी (मितसिते यत्र सरिते यत्र सगते, त्रुक खिलभाग) गंगा हूँ और भीमचण्डी आधुनिक भीमचण्डी हूँ जो आधुनिक पंचकोसी के रास्ते पर पड़ती हूँ पवंतेश्वर का ठीक–ठीक पता नही पता शायद यह मन्दीर राजघाट के आस–पास कही रहा हो।

<u>**वैदिक पौराणिक तथा बौद्ध ग्रन्थों के साक्ष्यः–**</u> वैदिक आर्यो के आगमन से पूर्व कालीन काशी के इतिहास के बारे मे कुछ कहना कठिन है। क्योंकि बनारस नगर और जिले दोनो में पुरातत्व सम्बन्धी खोज अभी बहुत कम हुई है। फिर भी अगर हम बनारस की वर्तमान आबादी का विश्लेषण करें तो हमें बनारस के प्राचीन इतिहास का कुछ साक्ष्य मिलेगा बनारस के आबादी में भर इत्यादि जातियों की संख्या काफी है काशी और उसके आस–पास के इलाकों में यह अनुश्रुति प्रचलित है कि एक समय में बनारस और गाजीपुर में भरों और सुइसे का, जो निश्चित ही अनायं जातिया थी, प्राधान्य था।

प्राचीन साहित्य के श्राधार पर काशी का धार्मिक इतिहास–ः हिन्दु, पुराणों में विशेषकर मध्यकालीन पुराणों में, काशी को शिव धर्म का प्रसिद्व श्रेय माना गया है पर वैदिक और बौद्व साहित्य में काशी जनपद और वाराणसी का महत्व उसका व्यापार और संस्कृति है धर्म नही। कुरूपचाल वेश में सुवधित आर्य–धर्म और वाराणसी के आर्यो के धार्मिक विश्वासो में अन्तर अवश्य था और इसलिए काशी को वैदिक साहित्य में विशेष स्थान न मिल सका।

मध्यकाल में बनारस की स्थिति उसके तीर्थ क्षेत्र और विद्या का केन्द्र होने का कारण थी पर महाजनपद युग में शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द तक्षशिला था, जहाँ देश के कोन–कोने से लोग शिक्षा का केन्द्र लिए जाते थे। तक्षशिला के बाद शिक्षा के लिए बनारस ही मशहूर था लगता बनारस को शिक्षा का केन्द्र बनाने का श्रेय तक्षशिला के उन स्नातको को था जिन्होने बनारस लौटकर शिक्षाण का कार्य प्रारम्भ किया (जातक 21 63, 21200) खुदकपाठ अट्ठकया (पू0 228) में तो यहा तक कहा गया है कि बनारस को कुछ शिक्षण संस्थाए तो तक्षशिला की शिक्षण संस्थाओं से भी पुरानी थी।

धम्मपद् अट्ठकया(31 4) में इस बात का उत्तेख है कि तक्षशिला के शरद नामक एक ब्राह्मण ने अपने पुना सुंस्रीम को शिक्षा के लिए बनारस भेजा। कुछ दिनों बाद बनारस में भी संसार प्रसिद्व आचार्य होने लगे जिनका का विद्यार्थियों को शिक्षा देना था (जातक 21236, 312,233,123)

ब्नारसवासिंयों में शिक्षा के प्रति इतना अनुराग था कि भोजन देकर वे गरीब बालको को शिक्षा दिलवाते थे। (जा0 21202) आज के दिन भी बनारस में विद्यार्थियों के लिए अनेक अत्र–सत्र हूँ और विद्यार्थियो को हर तरह से मदद करना काशिवासी के लिए अपना धर्म मानते है।

गुहिल जातक में कहा गया है कि बनारस संगीत–विद्या का केन्द्र था (जा0 212) इत्यादि एक ऐसा समय था जब वहाँ वीणावादन की प्रतियोगिता भी होती थी।

बात का तो पता नही लगता कि महाजनपद युग में बनारस की पाठशालाबों का क्या पाठ्यक्रम था पर बनारस और तक्षशिला के शिक्षाक्रमों में समानता होने के कारण हम बनारस के शिक्षा श्रम के बारे में कुछ आवाज लगा।

काशी का पौराणिक महत्व है इसका महत्व इसी बात से प्रकट होता है कि स्वयं भगवान विष्णु भोलेनाथ की पूजा करने के लिए यहाँ आए थे। यह जगह भगवान शिव ने श्रीहरि विष्णु से अपने निवास के लिए ली थी यहां स्थित कपाल मोचन तीर्थ वह स्थान है, जहाँ शिव जी को ब्रह्म हत्या के पाप से मुक्ति मिली थी।

भारत मे हिन्दू धर्म एवं सभ्यता के केन्द्र के रूप में काशी यानि वाराणसी का विशेष महत्व है बनारस की कई विशेषताएँ है एवं इसके कई नाम है जो इसे भारत की सांस्कृतिक राजधानी बनाता है।

पुरातत्व, पौराणिक कथाओं, भूगोल, संस्कृति अध्यात्म, कला, वाराणसी का इतिहास, उत्तरवाहिनी गंगा पर अपनी अनूठी स्थिति भारत के इतिहास के माध्यम से इसकी यात्रा, भगवान शंकर के त्रिशूल पर बसी यह नगरो आदि विशेषताएं इसे सबसे पुराना जीवित शहर का महत्व प्रदान करता है। प्लास्टिक सर्जरी, सुश्रुत, धनवन्तरी (देव चिकित्सा के देवता), दिवोदास के प्राचीन आयुर्वेदिक ज्ञानभंडार का केन्द्र रहा है वर्तमान में सभी प्राचीन और आधुनिक चिकित्सा प्राणालियों के संस्थान यहाँ उपलब्ध है। इसे लोक संगीत और नाटक(विशेष रामलीला) का एक बहुत समृद्व भण्डार है, संगीत समारोहो, मेलों और त्यौहारों तथा अखण्डों एवं खेल की समृद्व परंपरा के परिपूर्ण है।

पवित्र प्रमुख और सामाजिक स्थानों की संस्था, सांस्कृतिक बहुलतावादी, भाषाई और जातिय समूहों। समृद्वियों, बुद्विजीवियों, मौखिक परंपराओं, जातियों और रीति रिवाजों, व्यक्तियों, व्यवसायों। कथक भारतीय शास्त्रीय नृत्य के आठ प्रमुख रूपों में से एक है यह उत्तर प्रदेश का शास्त्रिय नृत्य रूप है। कथक बौद्विक संस्कृत शब्द से लिया गया है कथा जिसका अर्थ है कहानी और कथाकार जिसका अर्थ है वह जो कहानी कहता है या कहानियों के साथ करना बनारसी साड़ी वाराणसी में बनाई जाने वाली साड़ी है , जो एक प्राचीन शहर जिसे बनारस (वाराणसी) भी कहा जाता है ये साड़ियाँ भारत की सबसे बहतरीन साड़ियों में से है और ये अपनी सोने और चाँदी की ब्रोकेड या जरी बढ़िया रेशम और शानदार कढ़ाई के लिए जानी जाती है। पौराणिक कथाओं में माना जाता है कि भगवान शिव को पान बहद पसंद है, पान के बिन भगवान भोलेनाथ की पूजा भी पूरी नही होती है, इसलिए घर में जब भी पूजा होती है तो उसमें पान का इस्तेमाल जरूर किया जाता है शायद इसलिए शिव नगरी का इस्तेमाल काशी का पान आज इतना प्रसिद्व हो गया है? बनारस अपने नाम के साथ–साथ अपने स्वाद के लिए भी पूरे दुनिया में प्रसिद्व है यहां के स्वाद का आनंद लेने के लिए लोग पूरी दुनिया से यहां आते है, यहां के बनारसी पान के अलावा बाटी–चोखा, पूरी कचौरी, जलेबी, लस्सी, चाट , गोलगप्पे का स्वाद भी अद्भुत है। मुगदल–बनारस की फेमस मिठाई जो खासकर सर्दियों में बनाई जाती है लम्बी शेल्फ लाइफ वाली मगदल को घर पर ही बनाने की विधि के लिए इस विडियों को देखिये बनारस की प्रसिद्व मिठाई, घर पर ही आसानी से बनाने की विधि कथक नृत्य की

उत्पत्ति 400 ईसा पूर्व भक्ति आन्दोलन से मानी जाती है और इसका प्रदर्शन उत्तरी भारतीय राज्यों के दरबारों में किया जाता था 14 वीं शताब्दी के आसपास मुगल काल के दौरान, बनारस के कारीगरों ने सोने और चांदी के जरी के धागों का उपयोग करके अद्वितीय और जटिल रेशम ब्रोकेड विकसित करके अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई 118वीं और 18वीं शताब्दी के दौरान बनारसी बुनाई को अधिक मान्यता और विकसित विशेषता मिलनी शुरू हुई। इस पर जरी का काम होता है। मान्यता है कि बनारस का पान भोलेनाथ को अति प्रिय है, ऐसा माना जाता है पान का पहला बीज भगवान शिव और माता पार्वती ने हिमालय के एक पहाड़ पर बोया था (इसी वजह से पान के पत्ते को पवित्र पत्ते के रूप में पहचान मिली आज भी सभी धार्मिक रस्मों में पान के पत्ते का इस्तेमाल होता है। बनारस अपने नाम के साथ–साथ अपने स्वाद के लिए भी पूरे दुनिया में प्रसिद्व है, यहां के स्पाद का आनंद लेने के लिए लोग पूरी दुनिया से यहां आते है, यहां के बनारसी पान के अलावा बाटी–चोखा, पूरी कचौड़ी, जलेबी, लस्सी, चाट, मगदल, गोलगप्पे का स्वाद भी अद्‌भुत है।

बेहद खास है वाराणसी का Kashiraj Kali Mandir देखने को मिलता है प्राचीन और आधुनिकता कला का अनोखा मिश्रण

1. वाराणसी में स्थित काशिराज काली मंदीर 200 साल पुराना है।
2. काशिराज काली मंदीर में प्राचीन गौतमेश्वर शिवलिंग भी श्रद्वा का बड़ा केन्द्र है।
3. पत्थर पर की गई कलाकारी प्राचीन और आधुनिक कला का अनोखा मिश्रण है।
4. वाराणसी का काशीराज काली मंदीर वास्तुकला के लिहाज से काफी खास है यहाँ कारीगरो द्वारा की गई शिल्पकारी भारत की विकसित पाषाण कला का जीता–जागता सबूत है।

इसे बनारस के गुप्त मंदीर के रूप में भी माना जाता है माँ काली को समर्पित इस मन्दीर के गर्भगृह में गौतमेश्वर शिवलिंग भी मौजूद है। आइए आपको बताते है इससे जुड़ी कुछ खास बातों के बारे में।

लाइफस्टाइल डेस्क, नई दिल्ली Kashiraj Kali Mandir उत्तर प्रदेश के वाराणसी में स्थित काशिराज काली मंदीर 200 साल पुराना है।

भारत की विकसित पाषाण कला के सबूतः

इस मन्दीर का निर्माण पूरी तरह से पत्थर को मदद से किया गया है, जो रथ के आकार में बना है मंदीर की दीवारों और खंभों पर तराशी गई पत्थर को पंखुड़िया, घंटिया और अंगूठियां उस समय भी भारत की अत्यधिक विकसित पत्थर की कला के ठोस सबूत है।

यहाँ बने डिजाइन से लेकर नक्काशी की बारिकी तक, सब कुछ इतना सटीक है कि यह कल्पना करना मुश्किल है कि उन्होने उस समय जबब तकनीक इतनी विकसित नही था तब बिना किसी आधुनिक उपकरण के इसे कैसे तराशा होगा।

मन्दिर को राजा की निजी संपती कहा जाता है काशि राज काली मंदीर नाम के साथ ही साथ इसे वाराणसी के गुप्त मंदीर के रूप में भी जाना जाता है मंदीर परिसर का भारी नक्काशीदार द्वारा उस युग की वास्तुकला कौशल की मिशाल है द्वारों और मंदीर के खंभो पर शर हाथी, नर्तकी, दवी–देवताओं को इतनी संदरता से उकेरा गया है कि यह कला देखते ही बनती है।

मंदीर पर की गई कलाकारी को छिपा हुआ खजाना भी कहा जाता है खास बात यह है कि इस कलाकृति को देखने पर ऐसा लगेगा कि ये कृतियां लकड़ी पर उकेरी गई है मंदीर के निर्माण के लेकिन जब इन्हें छूकर देखा जाए तो पता चलता है कि यह कलाकारी लकड़ी पर नही पत्थर पर की गई है मंदीर का वास्तु प्राचीन और आधुनिक कला का मिश्रण है। 18वीं सदी के इसा मां काली को समर्पित मंदीर के गर्भगृह में गौतमेश्वर शिवलिंग भी है यह भी कहा जाता है कि उस समय यहाँ गौतम ऋषि का आश्रम था और उन्होंने यहां

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

शिवलिंग की स्थापना करके उसकी पूजा अर्चना की। इस वजह से इस शिवलिंग को गौतमेश्वर शिवलिंग कहते है।

वाराणसी के 7 प्रसिद्ध मन्दिर–
वाराणसी, जिसे पहले काशी कहा जाता था, भारत में मन्दिरों का शहर है यह अपने शानदार और समृद्व इतिहास वाले मंदीरों के लिए प्रसिद्ध है दुनिया भर से लाखो श्रद्धालु इस शहर में आते है इस लेख के माध्यम से हम यहां के प्रसिद्ध मंदिरों के बारे मे जानेंगें
भारत माता मन्दिरः– यह मन्दीर अपने आप में महत्वपूर्ण है क्योकि इसमें भारत देश भी शामिल है यह मन्दिर भारत में महत्वपूर्ण है और इसे देवी के रूप में पूजा जाता है यह उन कुछ मन्दीरों में से एक है, जो भारत माता को समर्पित है इसे हर साल दुनिया भर से लाखों लोग देखने आते है इस मन्दीर का निर्माण वर्ष 1936 में बाबू शिव प्रसाद गुप्त ने कराया था। वह प्रसिद्व स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे।

संकट मोचन मंदिरः–
यह मन्दिर भगवान हनुमान को समर्पित है इस मंदीर में देश भर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते है इस मन्दिर में कई बंदर भी मौजूद है इसका निर्माण मदन मोहन मालवीय ने करवाया था मन्दिर में प्रसाद के रूप में विशेष बेसन के लड्डू होते है और वहां बंदरों को खिलाना शुभ माना जाता है।

दुर्गा मन्दिरः–
यह मन्दिर देवी दुर्गा को समर्पित है और विशिष्ट नगर शैली में बनाया गया है। इसके परिसर के अंदर गहरे पानी का एक तालाब है, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह कुछ वर्षा से गंगा नदी से जुड़ा हुआ है ।

मृत्युजंय महादेव मन्दिरः–
यह मन्दिर रोग ठीक करने के लिए प्रसिद्व है। इसे रावणेश्वर मन्दिर भी कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि मन्दिर अपने सभी भक्तों को अप्राकृतिक मृत्यु से दूर रखता है और बिमारियों का इलाज करता है यहां आने वाले भक्त ''मृत्युंजय जप'' करते है और कुएं (जिसे कूप कहा जाता है) से पानी अपने ऊपर छिड़कते है।

अन्नपूर्णा देवी मन्दिरः– देवी अन्नपूर्णा देवी पार्वती का अवतार है और भोजन और पोषण का प्रतीक है मन्दिर को मुख्य देवी अन्नपूर्णा हैं। मंदिर में देवी की एक सुनहरी छवि है जिसके बारे में कहा जाता है कि वह काशी शहर को भोजन की से बचाती है।
इसका निर्माण मराठा पेशवा बाजीराव ने करवाया था। मन्दिर जाने का सबसे अच्छा समय अन्नकूट उत्सव के दौरान होता है, जो दिवाली के बाद होता है इस त्यौहार के दौरान तीर्थयात्रियों को सिक्के दिए जाते है और कहा जाता है कि इसको उन्हे समृद्धि प्राप्त करने में मदद मिलती है।

काशी विश्वनाथ मन्दिरः– वाराणसी शहर इसी मन्दिर के नाम से जाना जाता है काशी विश्वनाथ मंदीर इस शहर के सबसे प्रसिद्ध मन्दीरों में से एक है और भगवान शिव को समर्पित है इसे 1194 ई0 में कुतुब–उद्दीन– ऐबक ने नष्ट कर दिया था और 18वीं शताब्दी में अहिल्या देवी होल्कर ने इसका पुनिर्माण कराया था
आज तक कोई नही जानता कि इस मन्दिर को मूल रूप से किसने बनवाया था, लेकिन यह देश के 12 ज्योर्तिलिंग में से एक है।

काशी विश्वनाथ का इतिहासः– काशी विश्वनाथ मन्दीर आदि काल से शैव दर्शन का केन्द्र रहा है, इसे समय–समय पर कई मुस्लिम शासको द्वारा ध्वस्त किया गया और उनमें अंतिम शासक औरंगजेब है मन्दीर की वर्तमान संरचना महारानी अहिल्या बाई होल्कर द्वारा वर्ष

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

1780 में करवाई गई थी इसका प्रबंधन 1983 से उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा किया जा रहा है।

काशी विश्वनाथ ज्योर्तिलिंग की स्थापनाः— माता पार्वती की बात मानकर भगवान शिव उन्हे काशी ले आए और तब से यही बस गए।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भगवान शिव की यह नगरी उनके त्रिशूल की नोक पर बसी हुई है और बाबा विश्वनाथ को विश्वेश्वर यानि विश्व के शासक के नाम से भी जाना जाता है।

श्री काशी विश्वनाथ, विश्वेश्वर

शैली— हिन्दू वास्तूकला

निर्माता— महारानी आहिल्या बाई होल्कर

स्थापिता—1780

दुर्गाकुण्ड— यह मन्दीर और कुंड का निर्माण 26वीं सदी में बंगाल की महरानी के द्वारा करवाया गया था। यह कुंड पहले गंगा नदी से जुड़ा हुआ था माना जाता है कि यहाँ देवी माता की मूर्ति स्वयंभू प्रकट हुई है कालांतर में वाराणसी नगर महापालिका सुन्दरी करण के अंतर्गत खूबसूरत फव्वारे का निर्माण किया।

वस्तु विवरणः—

प्रकार — नागर

निर्माता— बंगाली महारानी

अवस्थिति उँचाई— 85 मीटर (279 फिट)

दुर्गा मंदिर काशी के पुरातन मंदीर में से एक है इस मंदिर का उल्लेख ''काशी खंड'' में भी मिलता है यह मंदिर वाराणसी कैन्ट से लगभग 5 किमी की दूरी पर है लाल पत्थरों से बने अति भव्य इस मंदिर के एक तरफ ''दुर्गा कुंड'' है इस कुंड को बाद में नगर पालिका ने फुहरि में बदल दिया जो अपनी मूल सुन्दरता को खो चुका है।